

# मतिः २०७० फाल्गुण १० गते । लमजुङ्ग खुदी- १

22 फरवरी 2014



धर्म संघ  
बोधश्रवण गुरु संघाय  
नमो मैत्री सर्व धर्म संघाय

महा मैत्री मार्ग गुरु, गुरु मार्ग और भगवान मार्ग का अनुसरण करके वसिमत भाव लेकर अवगमन करने वाले समस्त संघ मतिरता धर्म प्रेमी अनुयायियों को मैत्री मंगलम करके, वर्तमान गुरु कृष्ण की स्मृतिके साथ सन्तापति सभी आत्माएं महा मैत्री धर्म के मार्ग पर शीतलता का बोद्ध करें। धर्म ही केवल ऐसा तत्व है जिसके धरातल पर टकि रहकर परमात्मा के साक्षात दर्शन पाने का अवसर प्राप्त होता है एवं भाव रहति दशिाहनि बैया समान भटक रही आत्माएं महा मैत्री का मंगल नाद श्रवण करके यथा शीघ्र बंधन मुक्त हो। जैसे प्यास की आत्यान्तकिता अनुरुप पानी का मोल होता है उसी प्रकार दया करुणा अहसिा श्रद्धा आस्था भक्तविश्वास और मार्ग के प्रति अटलता से मानव जीवन मे धर्म का मोल होता है। धर्म मे प्रवेश होने का मतलब मुक्ति और मोक्ष के मार्ग मे लीन होना है। जसि मार्ग मे मुक्ति और मोक्ष रुपी तत्व नही होते, सत्य धर्म मे उसे कभी भी मार्ग कहना स्वकार्य नही कयिा जा सकता। एवं धर्म खण्डति संस्कृति मे ना होकर आत्मा और परमात्मा बचि के सेतु मैत्री ज्ञान की परिपूर्णता मे उपलब्ध होता है। मनुष्य मैत्री ज्ञान से दूर रहकर कोई भी अभ्यास करले, सत्य तत्व की प्राप्ति असंभव है। कृष्णकि संसार मे लाभ दिखाई देने वाले भी अन्ततः सभी व्यर्थ रह जाएंगे। असंख्य प्राणियों का जीवन चक्र और अवगमन, समस्त लोकों की व्यवस्था, एवं आत्मा अनात्मा और परात्मा बीच की अखण्डता है। धर्म सूर्य का उदय और अस्त होना, आकाश मे चांद तारों का चमकना, प्रकृति मे फूल का खलिना है। धर्म अन्ततः अघोर दुः स्वपन को समझ कर वास्तविकता मे अपने आप को सकुशल पाने जैसे ही इस अनतिय संसार की कृष्ण भंगुरता का बोद्ध करना है। धर्म कुशल वचिार और बुद्धमिान मनुष्य के क्या गुण है, धर्म मे वस्तु धर्म क्या करता है जैसे प्रश्न करने से अच्छा संसारकि वस्तु की वासना और बन्धनो से मनुष्य ने अपने आप को क्या दयिा है ऐसे प्रश्नो की खोज क्यों नही करता? मनुष्य के खुद से अनुसरण कयिे मार्ग मुक्ति और मोक्ष रुपी तत्व रखता है या नही जैसे वषिय मनुष्य की अपनी नतिांत व्यक्तगित अन्तर खोज है। गुरु धर्म पूरा करते है लोक को मार्ग देकर पर मार्ग पर यात्रा मनुष्य को स्वयं करनी पडती है। गुरु से मार्ग दृष्टि रहे हुए मार्ग पर यात्रा करने वाली आत्माओं के संचति कएिे

हुए पुण्य और अन्य कर्म अनुरूप पाने वाले तत्व और भोगने पड़ने वाले सत्य सुनिश्चित होंगे। मार्ग में विविध कठनाईयां आना ऐसा स्वाभाविक होने पर भी तात्त्विक विषय अन्ततः गुरु मार्ग के प्रतिश्रद्धा और विश्वास है। होश रखिए, धर्म तत्व के अनमोल रत्नों से भरपूर यह महा मैत्री मार्ग सर्वज्ञान के महा बोद्ध से पूर्ण है। तथापी मनुष्य रक्ति शब्दों का भण्डारण करने से पूर्व अपने जीवन में प्रयोग व गुरु मार्ग का अनुसरण करके शक्ति ही मार्ग तत्व का बोद्ध करते हैं। धरती में टिके रहकर आकाश आसन में अडगि मनुष्य चोले में रहकर भी मैत्री तत्व के बोद्ध के साथ परमात्मा के विशिष्ट स्वरूप के दर्शन पाना, अपने साथ समस्त लोक के रहस्य का बोद्ध करना, चित्त के असंख्य भवसागर से पानी की तरह वशवभूत होकर खुले आकाश में मुक्त होना है। सर्व धर्म और गुरु ज्ञान से भी उच्च गुण के तत्वों को प्रदान करके विश्वभर पूर्वी भ्रमति अस्तित्व लोप कराने की योग्यता को ही मैत्री धर्म कहा जाता है। तदनुसार सर्व धर्म का पूर्वी अस्तित्व सभी मैत्री धर्म के मार्ग में ही समिटे हुए है। मैत्रीय मार्ग पर मनुष्य जीवन के अन्तमि कृष्ण तक धर्म का सत्य अभ्यास करके ही मात्र धर्म लाभ करता है। इस मैत्री संदेश के साथ सम्पूर्ण विश्व मानव भक्ति के क्लेश को मुक्त करने के लिए मैत्रीय ११ (ग्यारह) शील दे रहा हूं।

- १) नाम, रूप, वर्ण, वर्ग, आस्था, समुदाय, शक्ति, पद, योग्यता आदिके आधार में भेदभाव कभी भी न करो तथा भौतिक, आध्यात्मिक जैसे मतभेदों को त्यागो।
- २) शाश्वत धर्म, मार्ग और गुरु को पहचान कर सर्व धर्म और आस्था का सम्मान करो।
- ३) असत्य, आरोप, प्रत्यारोप, अवमुल्यन तथा अस्तित्वहनि वचन करके भ्रम फैलाना त्यागो।
- ४) भेदभाव तथा मतभेद के समिकन करने वाले दर्शन व रास्तों को त्याग कर सत्य मार्ग अपनाओ।
- ५) जीवति रहने तक सत्य गुरु मार्ग का अनुसरण करके पाप कर्मों को त्याग कर गुरु तत्व के समागम में सदा लीन रहो।
- ६) स्वयं तत्व को प्राप्त किए बिना शब्द जाल की व्याख्या से सिद्ध करके इसे न खोजो तथा भ्रम में रहकर ओरों को भ्रमति न करो।
- ७) प्राणी हत्या हिसा जैसे दानवीय आचरण त्याग कर सम्यक आहार करो।
- ८) राष्ट्रीय पहचान के आधार में मनुष्य व राष्ट्र प्रतिसंकीर्ण सोच न रखो।
- ९) सत्य गुरु मार्ग का अनुसरण करके स्वयं के साथ साथ विश्व को लाभान्वति करने वाले कर्म करो।
- १०) सत्य के गुरु मार्ग रूप लेकर उपलब्ध होने पर समस्त जगत प्राणी के नीमति तत्व प्राप्त करो।
- ११) चित्त के उच्चतम और गहनतम अवस्था में रहकर अनेकौ शील को आत्म बोद्ध करके सम्पूर्ण बन्धनों से मुक्त हो।

इन मैत्रीय ११ (ग्यारह) शील के साथ सभी संघ आत्मसात करके अपने साथ साथ समस्त प्राणियों के उद्धार करने वाले इस सत्य मार्ग ज्ञान का सार बोद्ध करें। संसारिक वस्तु नाम यश कीर्तिके पीछे अहंकार वश न भटक कर सदा आत्मा में मैत्री भाव रखते हुए परमात्मा की स्मृति में तटुष्ट रहो। लोक में सत्य धर्म का पुनः अनुष्ठान करने के लिए युगों के अन्तराल में गुरु मार्ग का अवतरण हुआ है। इस स्वरूपमि कृष्ण का बोद्ध जैसे प्राणी एवं वनस्पति कर रहे हैं वैसे ही मनुष्य भी क्लेश रहति होकर महा मैत्री मार्ग में यथाशक्ति धर्म लाभ करें।

सर्व मैत्री मंगलम्  
अस्तु तथास्तु ॥

<https://bsds.org/hi/news/170/miti-2070-phalagana-10-gata-lama-janaga-khadi-1>

# धर्म देशना चतिवन (जून ८, २०१३)

8 जून 2013



धर्म संघ

बोधश्रवण गुरु संघाय

नमो मैत्री सर्व धर्म संघाय

सत्य धर्म गुरु ओर मार्ग का अनुसरण करते हुए लोक धर्म तत्व का बोध करे, एवं मुक्तिओर मोक्ष रुपी इस महा मैत्री मार्ग के परम ज्ञान से समस्त लोक प्राणी तृप्त हों। धर्म तत्व का वज्रज्ञान अतगिहन ओर असीम है। साधारण तथा तत्व बोद्ध होने के नमित्त स्वयं तत्वरुपी होना पड़ता है। तथा धर्म तत्व केवल इस लोक मे मात्र समिति न रहकर समस्त अस्तित्व मे रहता है। मनुष्यों के लिए बोद्ध करने का ये लोक मात्र एक अवसर है। तत्व बोद्ध करने के नमित्त किसी वृक्ष मे असंख्य फूल अंकुरति होने पर भी समिति मात्र फल का स्वरुप प्राप्त करते है, ऐसे ही मनुष्य धर्म प्राप्त करते है। तथापि सत्य धर्म के मार्ग मे झरे हुए फुलों का भी अस्तित्व ओर महत्व है। एवं प्रत्येक फलों की अलग वशिषता ओर धर्म गुण हुआ करते है। सत्य धर्म का अनुसरण करना एवं धर्म तत्व की प्राप्ति करके मुक्तिओर मोक्ष मे लीन होना ही मनुष्य लोक ओर जीवन का मूल उद्देश्य है। गुरु अपना धर्म पुरा करता है संसार को मार्ग देकर, तथापि मार्ग मे बढने वाले प्रत्येक कदम की जमिमेवारी मनुष्य की अपनी ही स्व व्यक्तगित खोज है। मुक्तिओर मोक्ष रुपी तत्व खुद से अनुसरण कएि हुए मार्ग मे है या नही है जैसे वषिय भी मनुष्य की अलग नतिांत व्यक्तगित खोज है। मनुष्य द्वारा अपने जीवन मे मैत्री ज्ञान से दूर रहकर धर्म के नाम मे कोई भी अभ्यास करने पर भी अस्तित्वगत सत्य तत्व की प्राप्ति असम्भव है। एवं जसि मार्ग मे मुक्तिओर मोक्ष रुपी तत्व नही होते उसको कभी भी मार्ग नही कहा जा सकता। वो केवल क्षणिक संसार के भोग मात्र होते है। जो मार्ग अहंकार ओर वसनाओं को अंगकार नही करते उन मार्ग पर मनुष्य चलना नही चाहते। पर वडिम्बना चतित के अन्तःस्करण मे बोद्ध प्रत्येक मनुष्य को है कौन मार्ग कहाँ ले जाता है। गुरु से मार्ग दर्शन हुए मार्ग पर यात्रा करने वाली प्रत्येक आत्मा के संचति पुण्य अनुरुप मलिनने वाले तत्व ओर भोगने पड़ने वाले सत्य सुनश्चिति है। तथापि होश रखें, यात्रा अपनी ही है। अहंकार ओर वसनाओं के दोष बोद्ध करके धर्म तत्व के गुण से परयुक्त होकर संसार से मुक्त हुआ जा सकता है जसिके नमित्त मनुष्य को जीवन के अन्तमि क्षण तक धर्म का सतत प्रयास करते रहना पड़ता है। इस मैत्री मार्ग ज्ञान का सार लोक आत्मसात करके बोद्ध करे।

सर्व मैत्री मंगलम

अस्तु तथस्तु ॥

<https://bsds.org/hi/news/158/dharama-dasana-citavana-jana-8-2013>

## धर्म देशना पत्थरकोट-१, सर्लाही (मिति २०६९ साल, चैत्र २७ गते)

9 अप्रैल 2013



धर्म संघ  
बोधश्रवण गुरु संघाय  
नमो मैत्री सर्व धर्म संघाय

महा मैत्रीय मार्ग का अनुसरण करके मार्ग गुरु गुरु मार्ग होते हुए भगवान् मार्ग तक के असंख्य भाव दर्शन में लीन रहकर समस्त प्राणलोक महा बोध का अमृत पान करे। एवं महा मैत्रीय गुरु और मार्ग का लोक में सदा आशीष बना रहे। जैसे असंख्य तारे दिखाई देने पर भी आकाश एक ही है, संसार में देखने वाले समस्त धर्म और मार्ग का मूल स्रोत अन्ततः एक ही है। उनका बोद्ध लोक के विभिन्न काल खण्ड में बोद्ध हुए या बोद्ध प्राप्त हुए गुरुओं से समय अनुकूल लोक कल्याण के नमित्तित् प्रतपादित मार्ग वर्तमान कृष्ण में विविध धर्म दर्शन मार्ग और संस्कृति के रंग में रंगे हुए हैं। धर्म और मार्ग के नाम पर लगातार सत्य तत्व से विमुख होकर सही, गलत, पाप, धर्म, गुरु और मार्ग न पहचान सकने व न चाहते हुए भी अनायास ही मनुष्य को अन्धकारमय तत्व-हीन दशा की ओर मँ जाते हुए मँ देख रहा हूँ। पूर्ववत् एक भाव होकर बोद्ध प्राप्त करने वाले बुद्ध केवल मार्ग इंगति कराने वाले मार्ग गुरु हैं, तथापी वर्तमान कृष्ण में पूर्ववत् बुद्ध के गुरु नहीं हैं जैसे भ्रम लोक में होकर भी इस मार्ग गुरु के गुरु कौन हैं जैसे प्रश्न और वास्तविकता यथेष्ट ही हैं। अस्तित्व में आसीन अनेकों भाव गुरु, मार्ग अब भी लोक में रहस्य ही हैं। समय की अत्यान्तकिता अनुरूप गुरु मार्ग दर्शन करा रहा हूँ। समस्त गुरुओं का एक ही मार्ग होते हुए

भी अपना अपना शासन और स्थान होता है, तथा शासन अनुरूप फल प्राप्त होती है। गुरु मार्ग वो मार्ग है जिस मार्ग में समस्त लोक प्राणी और वनस्पति मैत्री मार्ग का अनुसरण करके मुक्ति और मोक्ष प्राप्त करते हैं। मानव लोक में मनुष्य स्वतन्त्र है, धर्म के मार्ग में लीन हो या पाप चर्या में जीवन व्यतीत करे। इस लोक का अर्थ ही धर्म और पाप को अलग अलग करके पहचानना है। पर मनुष्य के खुद से किये अछे बुरे कर्म अनुरूप फल सुनिश्चित है। युगों पश्चात लोक में गुरु मार्ग का अवतरण हुआ है समझदारी अहंसा, दया, करुणा, प्रेम तथा मैत्री भाव के रस से व्याकुल लोक को तृप्त करके मैत्री के शासन को स्थापित करने के नमित्त। पर सर्वज्ञान की भावना रखने वाला मनुष्य अहंकारवश वर्तमान इस गुरु क्षण का सदुपयोग नहीं कर पाता। एक क्षण आत्मा को साक्षी रखकर मानव कुल भावना करे कि गुरु की यह तपस चर्या क्यों? अन्ततः केवल लोक प्राणी और वनस्पति के मुक्ति और मोक्ष के नमित्त तो तथापी है। कोई गुरु से अन्य संसारिक वस्तु के लाभ जैसी आशा रखे है पर गुरु के पास दे सकने मात्र धर्म मार्ग मुक्ति और मोक्ष हैं। पर वडिबना देखिए अनादी काल से संक्रमित मनुष्य की मनोवृत्ति बदले में गुरु को देती है आरोप, अवशिवास, हंसा, बाधा, अडचना। इस मानव कुल के समाज और व्यवस्था के साथ साथ समस्त लोक को धर्म और मार्ग की आवश्यकता पड़ती है, नाकी धर्म को। मनुष्य ये सत्य बोध करें एवं मैत्री भाव तत्व की खोज में जीवन यापन करें। सत्य मार्ग का लोक व्यापी दर्शन कराने के नमित्त आने वाले दानों में गुरु भ्रमण भी होना ही है।

सर्व मैत्री मंगलम

अस्तु तथास्तु॥

<https://bsds.org/hi/news/148/dharama-dasana-patatharakota-1-saralahi-miti-2069>

**महासम्बोधि गुरु धर्म संघ जी से २०६८ भाद्र २५, २६  
और २७ सन्धिुली में हुई विश्वशान्ती मैत्री पुजा के  
अवसर पर दिया गया धर्म संदेश (१० सैप्टम्बर, २०१२)**

10 सतिम्बर 2012



सत्य धर्म और गुरु का अनुसरण करते हुए वर्तमान युग समय में यहाँ उपस्थिति अनुपस्थिति समस्त पुण्यवान् आत्माओं को मैत्री मंगल करते हुए, लोक कल्याण एवं प्राणीधान के इस महा मैत्री मार्ग पर रहकर आत्मा, शरीर और वचन गुरु के साक्षी होकर शाश्वत धर्म का उद्घोष कर रहा हूँ। शाश्वत श्वास होकर अजर, अमर अविनाशी तत्त्व के बोद्ध करने के नमित्त चित्त में मात्र एक सुर धर्म को लेकर जीवन चर्या करनी पड़ती है। धर्म शब्द फिर भी अपने आप में पर्याप्त नहीं है। कैसे धर्म मात्र एक शब्द में समाहित हो सकता है जिसे धर्म तत्त्व में समस्त लोक आते हैं। धर्म कोई पता लगाने वाला तथ्य न होकर बोद्ध करने वाला सत्य है। मनुष्यों के साथ ही नहीं मात्र, चराचर जगतप्राणी एवं वनस्पतियों के साथ समागम में रहकर दया, करुणा, प्रेम, मैत्री भाव स्थापित कर सकने पर, मैत्रीभाव के रस का सेवन कर सकने पर, अपूर्व मैत्री भाव में जीवन चर्या की जा सकती है। फलस्वरूप उपरान्त मुक्ति और मोक्ष प्राप्ति होती है। धर्म के नाम में प्राणी हत्या, रीढ़ी, चमत्कार दिखाना, तन्त्र-मन्त्र करना मात्र कृष्णकि स्वार्थपुर्त के रास्ते हैं। धर्म मात्र वो है जो प्राणी को भेदभाव रहित कर्म अनुरूप मुक्ति और मोक्ष का मार्ग प्रदान करता है। परापूर्व काल से लोक में मनुष्य भवसागर में रुल कर तत्त्वहनि वस्तु और मार्ग पर तत्त्वरूपी मनुष्य चोला लिए कल्पों से जाने-अज्ञाने भटक रहा है। धन्य है वो पुण्यवान् आत्माएँ जो कर्म शरण में रहकर सत्यमार्ग का अनुसरण कर रही हैं। एवं गुरु स्वयं भी पूर्ववत् हजारों बुद्धों से उच्च गुरुओं के धर्म शासन में रहते आएँ हैं। भावदिवनों में गुरु और धर्म के दर्शन कराता रहूँगा और सदा करा रहा हूँ। असंख्य भाव जस में रुल कर तृष्णावश संचित किये हुए कर्मों के निवारण करने के नमित्त धर्म के शरण में रहकर शुद्ध चित्त की भावना करते हुए अखण्ड रूप से कर्त्तव्य भी वमिख न होकर गुरुमार्ग में लगना पड़ता है। मैं और मेरा जैसे लोभ और अहंकार नभाने वाली ममता को त्याग कर सर्व प्राणी लोक के नमित्त अनश्वर भाव के साथ जीवन यापन करने पर ही मात्र मनुष्य जीवन सफल होता है। अन्ततः लोक में आने का उद्देश्य क्या है, खोज कौन से तत्त्व की है, सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ साथ अपनी स्वयं प्रतिदायित्व और धर्म क्या है, आत्मा अनात्मा परमात्मा बीच के सेतु क्या है, ऐसे असीम और सुखासम अन्तर खोज में जीवन का कालचक्र व्यतति करना पड़ता है नाकि कृष्णकि वलासिता और भौतिक बन्धनों मात्र। अन्ततः भेदभाव रहित एक प्राणी, एक जगत, एक धर्म एवं मैत्रीभाव स्थापित करते हुए लोक को धर्म ध्वनी में अलंकृत करने के लिए और विश्वभर के असंख्य व्याकुल प्राणियों को मैत्री रस देकर तृप्त कराते हुए मार्ग दर्शन कराने के लिए आने वाले समय में गुरु भ्रमण होना ही है। गुरु सत्य है, क्योंकि गुरु धर्म में है। मात्र गलत एक ही है, भौतिक संसार में गुरु से धर्मको शासन वसितार भए को है। तथापि जो है यही है, सत्य है।

सर्व मंगलम्

अस्तु तथास्तु ॥

<https://bsds.org/hi/news/137/mahasamabodhi-gara-dharama-sagha-ji-sa-2068-bhada>